14

असाज़्प्रदायिक मसीहियत: बपतिस्मा ज़्या है?

इस अध्ययन का उद्देश्य प्रत्येक निष्कपट मन वाले हर व्यज़्ति को यह समझाने में अगुआई करना है कि विश्वासियों में फूट उचित नहीं है, यह मसीह द्वारा हमारे पिता की इच्छा पूरी करने में रुकावट है ज़्योंकि मसीह और उसके प्रेरितों ने विश्वासियों की एकता के लिए प्रार्थना के साथ-साथ काम भी किया था। मसीही अर्थात मसीह जैसे बनने के लिए हर मसीही को इस फूट की निन्दा करनी चाहिए और मेल के बंध में आत्मा की एकता को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए (देखिए यूहन्ना 17:20, 21; प्रेरितों 4:32; 1 कुरिन्थियों 1:10-13; इफिसियों 4:1-6)।

विश्वासी और निष्कपट मन वाले व्यज़्ति को यह समझना आवश्यक है कि साज़्प्रदायिकवाद (डिनोमिनेशनवाद) इन फूटों की जड़ है। किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य होने का अर्थ इसका समर्थन करना है। बाइबल की सबसे स्पष्ट शिक्षा का प्रत्यक्ष विरोध किए बिना हम किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य नहीं बन सकते। यदि हम विश्वासियों में पाई जाने वाली फूट की बुराई से छुटकारा पाना चाहते हैं तो पृथ्वी से हर प्रकार की साज़्प्रदायिकता को निकालना होगा।

परमेश्वर के वचन को पूरी तरह से मानने के लिए आधुनिक शिक्षा में से साज़्प्रदायिकवाद की हर शिक्षा को निकालना होगा। एक मसीही अर्थात प्रभु का चेला या परमेश्वर का बालक वही हो सकता है जो अपने धार्मिक जीवन में केवल पवित्र आत्मा की अगुआई के अनुसार चलता हो। सदियों तक, जिसमें वे सैकड़ों वर्ष भी शामिल हैं जिसमें यीशु, प्रेरित और परमेश्वर की प्रेरणा पाए सैकड़ों लोग रहते थे, मसीह में विश्वास करने वाला कोई व्यज़्ति ऊपर दिए गए नामों के अलावा किसी दूसरे नाम से नहीं पहचाना जाता था। तो फिर साज़्प्रदायिक कलीसियाएं या डिनोमिनेशनें कहां से अस्तित्व में आ गईं? परमेश्वर के पवित्र जन लोगों को किस कलीसिया में लाते थे? परमेश्वर द्वारा प्रेरणा देने के समय मसीही लोग किस कलीसिया में रहते थे, कैसे काम करते थे और किस तरह आराधना करते थे? कोई नहीं है जो यह दावा करे कि उस समय कोई साज़्प्रदायिक कलीसिया थी। यह मृत्यु से भी अधिक प्रमाणित बात है कि, नये नियम के इतिहास के अनुसार, केवल परमेश्वर की या मसीह की ही कलीसियाएं थीं। ज़्योंकि पवित्र आत्मा ने केवल इनके नाम ही पत्र लिखवाए थे। किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के नाम नये नियम में एक शज़्द भी नहीं लिखा गया था। निश्चय ही, पवित्र आत्मा किसी ऐसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के नाम पत्र नहीं लिखवा

सकता था जिसका अस्तित्व ही न हो। नये नियम में किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के नाम पत्र का मिलना उतना ही असज़्भव है जितना उसमें अमेरिका का नाम ढूंढ़ना।

तर्क से, इसका अर्थ यह है कि नये नियम में दी गई पवित्र आत्मा की शिक्षाओं को विश्वास से मानने वाले लोग केवल मसीही होने चाहिए। इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि बाइबल की शिक्षाओं को अपने जीवनों में अंगीकार करने से वे परमेश्वर की कलीसिया के सदस्यों के अलावा कुछ और नहीं बनते।

इस अध्ययन में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि हम एक ही तरह से ''समझ'' सकते हैं। कम से कम यह तो निश्चित है कि हम किसी अर्थ को इतने नज़दीक से समझ सकते हैं कि पहली सदी में परमेश्वर के बाग में लगाया गया एकता का सुन्दर फूल इज़्कीसवीं शताज़्दी में भी बिना मुरझाए खिला हुआ मिलता है। कहने का तात्पर्य यह कि इस शताज़्दी में रहने वाले विश्वासी पहली शताज़्दी के चेलों की तरह ही सचमुच एक मन और एक चिज़ हो सकते हैं। पवित्र आत्मा की शिक्षा इतनी स्पष्ट है कि उसकी अगुआई में चलने पर फूट के लिए किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया से प्रीति और समर्पण के सिवाय कोई और बहाना हो ही नहीं सकता।

प्रेरितों द्वारा अगुआई के लिए सामर्थ पाने के लिए ''प्रतीक्षा'' के बाद होने वाली पहली सुसमाचार सभा की समीक्षा करने पर, हमने शिक्षा पर फूट पड़ने की दो बातें देखी थीं। परन्तु गहराई से पतरस की भाषा की समीक्षा करने पर, यह दिखाया गया है कि बाइबल के अनुसार रास्ते में पहले ''कांटे'' के समय निष्कपट मन वाले लोगों में फूट होने का कोई कारण नहीं है। पतरस की भाषा को सरल और स्पष्ट अर्थ में समझकर उस फूट को स्पष्ट किया जा सकता है जो वहां पर पड़ती है और मसीह में एक भी सच्चाई को त्यागे बिना प्रत्येक विश्वासी को मसीह में एक करती है। इस बात की पुष्टि करते हुए कि यह सबसे सरल व्याज़्या ही सबसे सही उज़र है, संसार के विद्वान लोग न्यायी के रूप में काम करते हैं।[1] यहां पर, केवल यही देखना शेष है कि कितने लोग मसीह में एकता लाने के लिए परमेश्वर की शिक्षा के अलावा बाकी सब कुछ छोड़ने को तैयार हैं।

पिछले पाठ में, हम रास्ते में दूसरे ''कांटे'' पर विचार कर रहे थे। यह कांटा बपतिस्मे की क्रिया बन गया है। संसार में ऐसे बहुत से भले और भोले मन वाले लोग हैं जो यीशु में विश्वास करते हैं। उस विश्वास से, वे ईश्वरीय शोक करने लगे हैं; और मन के पश्चाज़ाप से उन्होंने पाप के जीवन को समाप्त करने (मन फिराने) का निश्चय कर लिया है और धार्मिकता का जीवन बिताने की ठान ली है। तो भी, उन्हें बपतिस्मे के लिए ''छिड़काव'' या ''उंडेलने'' को स्वीकार करने के लिए बाइबल से बाहर की शिक्षा को मानने के लिए कहा गया है। इस तरह जैसा कि हम में से ज्यादातर लोग मानते हैं कि वे बपतिस्मा लेने की शर्त वाली हमारे प्रभु की आज्ञा मानने में असफल रहे हैं। परमेश्वर न करे कि मैं इन लोगों की निष्कपटता पर कोई संदेह करूं। मैं उन्हें भी उतना ही ईमानदार मानता हूं जितना कि अपने मन के बारे में दावा करता हूं! परन्तु ईमानदार और भोले मन वाले लोगों को यह भी मानना पड़ेगा कि इस संसार में निष्कपट मन वाले लोग भी हैं और उन्हें इसलिए गलत कहा जाता है ज़्योंकि उन्हें गुमराह किया जाता है। यीशु हम सबसे एक होने की बिनती करता है, और बपतिस्मे से सज़्बन्धित बातों पर असहमत होकर

हम एक नहीं हो सकते, इसलिए हमें इससे लाभ तभी हो सकता है जब हम इस विषय पर कही गई परमेश्वर की बातों को सावधानीपूर्वक, ईमानदारी से और निष्कपट होकर मानें।

पिछले पाठ में इस तथ्य पर ध्यान दिया गया था कि ''बपतिस्मा'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द का अनुवाद नहीं बल्कि उस शब्द का रूपांतरण है जिसका इस्तेमाल हमारे प्रभु ने किया था। यह यूनानी भाषा का अनुवाद नहीं बल्कि इसे हिन्दीकरण या अंग्रेज़ीकरण करके इसके रूप और उच्चारण में परिवर्तन किया गया है। इस बात में कोई विवाद नहीं है। पिछले पाठ में यह भी समझाया गया था कि यह तथ्य हमें इस शब्द के अर्थ के लिए यूनानी शब्दकोशों में देखने के लिए बाध्य करता है। हमें इस शब्द की वही आकृति दिखाई देनी चाहिए जो यीशु द्वारा इसका इस्तेमाल करने के समय यूनानियों को दिखाई गई थी। यदि यीशु इसका इस्तेमाल किसी नये अर्थ में नहीं कर रहा था, तो यह अपने आप में ही स्पष्ट है। यदि कोई अपने आपको पूरी तरह से संतुष्ट करने के लिए इसकी खोज करने की कोशिश करता है कि यूनानी भाषा के सभी प्रामाणिक लेज़िसकोग्राफर (शब्दकोश संकलनकर्ज़ा) इस शब्द की अपनी परिभाषाओं में लगभग एकमत हैं कि दो निष्पक्ष मन वाले लोगों को इसके अर्थ पर सहमत होना आवश्यक है। किसी प्रामाणिक लेज़िसकन (शब्दकोश) में इस शब्द का अर्थ ''छिड़काव'' या ''उंडेलना'' नहीं मिलता। लिड्डल और स्कॉट ने अपने शब्दकोश के एक संस्करण में इसका अर्थ ''ऊपर उंडेलना'' दिया है; परन्तु इसे संशोधित करके उन्होंने इस अर्थ को निकाल दिया। ऐसा करके, उन्होंने भी साक्षी दी है कि जहां तक हम जानते हैं किसी यूनानी लेखक ने इस शब्द का इस्तेमाल ''उंडेलना'' के रूप में नहीं किया है। कहा जा सकता है कि कोई विद्वान बपतिस्मा लेने की हमारे प्रभु की आज्ञा में इस्तेमाल होने वाले यूनानी शब्द के अर्थ ''छिड़काव'' या ''उंडेलना'' के पक्ष में होने का जोखिम नहीं उठाएगा।

यदि शब्दों के अर्थ के सम्बन्ध में किसी बात को ठहराना विद्वानों के हाथ में होता, तो वे हमारे प्रभु द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द *बेपटिज़ो* (''बपतिस्मा'') का अर्थ स्वयं ही तय कर देते। इन विद्वानों के अनुसार, होमेर के समय से इस शब्द का अर्थ केवल एक ही था। संसार के विद्वानों द्वारा दिया और ठहराया गया अर्थ ''डुबोना, भिगोना, ढकना और धोना'' है।

यूनानी शब्द के रूप में *बेपटिज़ो*, जिसका अंग्रेज़ी शब्द ''बेपटाइज़'' है, के अलावा अंग्रेज़ी के लेखकों ने भी इसका वही अर्थ दिया है जो यूनानी–अंग्रेज़ी शब्द कोशों में यूनानी शब्द का दिया गया था। एक क्षण के लिए धार्मिक लेखों में इसके उपयोग को निकालकर, आइए इसका अध्ययन पूरी तरह से अंग्रेज़ी विचार से इसके ''सांसारिक'' इस्तेमाल को लेकर करते हैं। इस तरह हम देखेंगे कि इसका अर्थ ''डुबोना, गोता लगाना, अभिभूत करना, डूबना, जल आदि में कूदना'' या इससे मिलता–जुलता है। किसी सांसारिक कथन में ''बपतिस्मा'' शब्द का अर्थ ''छिड़काव'' या ''उंडेलना'' के समान नहीं होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी प्रामाणिक लेखक ने कभी डुबोने, गोता लगाने, अभिभूत होने या बपतिस्मा लेने वाली वस्तु के डूबने के अलावा ''baptize'' या बपतिस्मा का अर्थ नहीं बताया। बपतिस्मा लेने के लिए पूरी तरह से डूबना या ढकना आवश्यक है। अंग्रेज़ी लेखों में ''baptized in debt,'' (कर्ज़ में डूबा) ''baptized with work,'' (काम में व्यस्त) ''baptized with questions,'' (प्रश्नों से घिरा) ''baptized in

suffering'' (कष्ट में) आदि शब्द मिलना आम बात है। इनमें से प्रत्येक अभिव्यक्ति में दो तत्व शामिल हैं लेकिन जिसमें बपतिस्मा लिया जाना है वह बड़ा है; बपतिस्मा लेने वाला इस से या इसमें अभिभूत हो जाता है, या डूब जाता है। इससे बड़ा विचार नहीं मिलेगा।

लगता है कि प्रभु ने अंग्रेज़ी में इस शब्द का सबसे अच्छा उदाहरण देकर इस चर्चा में सहायता करने का जिम्मा मुझे सौंप दिया है। इस उदाहरण का इस्तेमाल *पिज़्टोरियल रीव्यू* के अंक में एक अच्छे लेख में किया गया था। यह लेख ''द लव लैटर्स ऑफ़ ए कन्फेडरेट जनरल'' की अंतिम किस्त थी। इन शानदार पत्रों के अंत में, लेखक जनरल जॉर्ज ई. पिज़्केट ने लिखा था:

> बुल रन, यॉर्कटाउन्स में, विलियज़्सबर्ग में *युद्ध में घिरे* (baptized in battle) इन लोगों के संघर्ष के इन अंतिम घंटों के कष्ट, भय और संताप खत्म हो गए, जब वे अलाबामा ब्रिगेड ऑफ़ विलकोज़्स के साथ, मैकलेलर्न की पूरी सेना को आगे बढ़ने से रोककर उन्हें सैवन पाइन्स, गेयन'स मिल, फ्रेज़ियर'स फार्म, सैकण्ड मेनसा, बून्सबोरो, शार्पसबर्ग, गेटिसबर्ग, बरमुडा हंडर्ड के सामने, फोर्ट हैरिसन, फाइव फोर्कस और सेलर'स क्रीक की ओर पीछे को धकेलते हुए आगे बढ़ गए।

हज़ारों लोगों ने इस लेख को पढ़ा है, और हर कोई इस बात को समझता है कि लेखक का ''baptized in battle'' से ज़्या अभिप्राय था। पढ़ने वाला समझ जाता है कि इसका अर्थ गृहयुद्ध में इन सिपाहियों का घिरना है। कभी किसी पाठक को समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ी कि इन जगहों पर उनकी छोटी-छोटी मुठभेड़ें हुईं जहां पर वे ''युद्ध में घिरे'' (baptized in battle) थे। हमारे प्रभु की आज्ञा के बारे में उसकी धार्मिक मान्यता जो भी हो, परन्तु हर पाठक को यह समझ है कि उसके कहने का ज़्या अर्थ है। ऐसा ही अंग्रेज़ी के किसी भी मानवीय लेखक की लिखी किसी बात के विषय में है। लेखक के कहने का अर्थ हमेशा यही होता है कि जिस तत्व का अधिकतर भाग इसमें शामिल होता है और जिस वस्तु को बपतिस्मा दिया जाता है या इसमें डुबोया जाता है वह इससे ढक जाती है (तुलना मरकुस 10:38)। अंग्रेज़ी के सभी पाठक हमारे प्रभु की शिक्षा को छोड़कर इसका एक ही अर्थ समझते हैं। उसकी पवित्र शिक्षाओं को पढ़ने के समय, हम अपनी-अपनी डिनोमिनेशन अर्थात साज़्प्रदायिक कलीसिया का चश्मा पहन लेते हैं और ''बपतिस्मा'' का अर्थ इस प्रकार निकालने की कोशिश करते हैं जैसे किसी और शब्द का नहीं अर्थात हम इसे बिल्कुल ही नया अर्थ दे देते हैं, जो कि किसी और शब्द को नहीं देते। ज़्या यह उचित है? ज़्या इस बात के लिए परमेश्वर हमें क्षमा करेगा?

पाद टिप्पणी

[1]इस पुस्तक में ''असाज़्प्रदायिक मसीहियत – बपतिस्मे के बाद उद्धार'' और ''असाज़्प्रदायिक मसीहियत – पापों की क्षमा'' पाठों पर विचार करें। पतरस ने कहा था कि पश्चाज़ापी विश्वासी अपने पापों की क्षमा ''के लिए'' (*eis*) बपतिस्मा लें, जो इस बात का संकेत था कि आज्ञा मानने वाले विश्वासी को बपतिस्मे *के बाद* ही क्षमा मिलती है।